Topic — DISTINCTION BETWEEN PRIMARY AND SECONDARY GROUP (प्राथमिक व द्वितीयक समूहों में अंतर)

Sol— प्राथमिक और द्वितीयक समूहों में अंतर निम्नलिखित रूपों में देखने को मिलता जो इस प्रकार से प्रस्तुत कर रहे हैं:-

(1) प्राथमिक समूहों का आकार छोटा होता है। कूले के अनुसार प्राथमिक समूहों में सदस्यों की संख्या प्रायः दो से लेकर 50 या 60 तक होती है। इसके विपरीत द्वितीयक समूहों का आकार बड़ा होता है, यह उसकी एक प्रमुख विशेषता होती है। इन समूहों में सदस्यता की कोई सीमा नहीं होती। इस कारण इनमें सदस्यों की संख्या एक सौ भी हो सकती है और एक लाख भी।

(2) प्राथमिक समूहों के सदस्यों के सम्बंध आमने-सामने के, घनिष्ठ व व्यक्तिगत होते हैं तथा उनके सदस्यों में हम की भावना, सहयोग, सहानुभूति, सद्भावना, प्रेम व प्रीति पायी जाती है। इसके विपरीत द्वितीयक समूहों के सदस्यों में सम्बंध दूर का, अप्रत्यक्ष व अवैयक्तिक होता है तथा इसमें सहयोग, सहानुभूति, सद्भावना, प्रेम व प्रीति का नितांत अभाव होता है।

(3) प्राथमिक समूहों के सदस्यों के पारस्परिक सम्बंधों की अवधि लम्बी होती है, क्योंकि उनका सम्बंध प्रेम, सहयोग, सद्भावना आदि आन्तरिक गुणों पर निर्भर करता है और ये गुण स्वतः ही सम्बंध को दृढ़ता तथा स्थायित्व प्रदान करते हैं। इसके विपरीत द्वितीयक समूह के सदस्यों का पारस्परिक सम्बंध छुओ और चले जाओ टाइप (Touch and go Type) का होता है जिसके कारण सम्बंध बहुत कम स्थायी होते हैं।

(4) प्राथमिक समूह के सदस्यों में कभी भी विशेष हित या स्वार्थों की पूर्ति के लिए नहीं होते। इसमें प्रत्येक सदस्य पूर्ण रूप में सम्पूर्ण हृदय से भाग लेता है परन्तु द्वितीयक समूहों में ऐसा नहीं होता। वे तो विशेष स्वार्थ-समूह (Special Interest group) होते हैं। इनके कार्यों में विशेषीकरण होता है और उन्हें एक विशेष हित की पूर्ति के लिए

बनाया जाता है।

(5) प्राथमिक समूह के सदस्यों का सम्बंध प्रत्यक्ष होता है और उनमे शारीरिक निकटता होती है। इस कारण वे एक दूसरे से प्रायः रोज़ मिलते है, बात-चीत, हँसी-मजाक होती है तथा प्रत्यक्ष रूप में विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान करते है, जबकि द्वितीयक समूहों के सदस्यों के बीच अप्रत्यक्ष सम्बंध होते है और उनमें शारीरिक दूरी भी पायी जाती है। इस सम्बंध को अप्रत्यक्ष (Indirect) कहा जाता है क्योंकि ये लोग इसे डाकखाना या पत्र, टेलीफोन, टेलीग्राम, रेडियो, टेलीविजन, चलचित्रों, समाचार-पत्रों जैसी लम्बी दूरी तय करने वाले आदान-प्रदान के अप्रत्यक्ष साधनों (Long distance Indirect means of Communication) के माध्यम से स्थापित करते है।

(6) प्राथमिक समूह स्वाभाविक होते है। इसी कारण इसके सदस्यों के आपसी सम्बंध भी अपने-आप स्वाभाविक रूप से स्थापित होते है। उदाहरणार्थ, किसी व्यक्ति को अपने मित्र के रूप में जबरदस्ती या किसी दबाव के कारण ग्रहण नही करते बल्कि यह सम्बंध अपने-आप बन जाता है परन्तु द्वितीयक समूहो में ऐसी बात नही होती क्योंकि वे तो अधिक बूझकर तथा चैतन्य रूप से बनाये गए समूह होते है। इसी कारण इसमें स्वाभाविकता के स्थान पर दिखावा, बनावट तथा स्वार्थ होता है।

(7) प्राथमिक समूह के कार्य-क्षेत्र सीमित और कम होता है। द्वितीयक समूहों का कार्य-क्षेत्र विस्तृत तथा बड़ी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए होता है।

(8) प्राथमिक समूह के सदस्यों का दायित्व (Liability) असीमित होता है और इसका कोई अंत नही होता। जैसे-कोई व्यक्ति अपने माता-पिता, भाई-बहन या मित्र के लिए कितना त्याग करेगा इसकी कोई निश्चित सीमा निर्धारित नही की जा सकती। इसके विपरीत, द्वितीयक समूहों में सदस्यों का दायित्व सीमित होता है और कुछ निश्चित शर्तों के अनुसार नियमित (Regulated) होता है।

(9) प्राथमिक समूह अनौपचारिक (Informal) होते है और अपने सदस्यों पर किसी तरह की कोई शर्त या कानून नही लादते। इसके विपरीत द्वितीयक समूह औपचारिक (Formal) होते है और अपने सदस्यों पर अनेक प्रकार के शर्तों, नियमों, कानूनों और कार्यविधियों को लादते है। यही नही, उन्हें न मानने पर या उन शर्तों को

तोड़ने पर अपराधी सदस्य को समूह - विशेष से निकाल तक दिया जा सकता है।

(10) प्राथमिक समूह अपने सदस्यों पर तिरस्कार, निंदा पंचायत, व्यक्तिगत दबाव आदि साधनों के द्वारा नियंत्रण रखता है, क्योंकि हर समय हर सदस्य एक दूसरे को घनिष्ठ तथा व्यक्तिगत रूप से जानता है। इसके विपरीत द्वितीयक समूह को अपने सदस्यों के व्यवहारों पर नियंत्रण रखने के लिए कानून, पुलिस, कोर्ट, सेना आदि द्वितीयक साधनों की सहायता लेनी पड़ती है।

(11) प्राथमिक समूह सार्वभौमिक (Universal) होते हैं ये संसार के प्रत्येक समाज में और संस्कृति के विकास के प्रत्येक स्तर (Stage) पर पाये जाते हैं। इसके विपरीत सभी द्वितीयक समूह सार्वभौमिक नहीं होते जैसे - साम्यवादी राज्य प्रत्येक देश में नहीं है।

(12) प्राथमिक समूह संख्या में गिने-गिने होते हैं। कूले ने प्रमुख रूप से, परिवारों, बच्चों के खेल, साथियों के समूहों तथा पास-पड़ोस को प्राथमिक समूह माना। द्वितीयक समूह संख्या में असंख्य होते हैं।

(13) प्राथमिक समूह व्यक्ति के सामाजिक स्वभाव व आदर्शों के निर्माण में आधारभूत होते हैं। इसी कारण कूले ने प्राथमिक समूह को मानव - स्वभाव का निर्माण स्थल कहा है। द्वितीयक समूह व्यक्ति के व्यक्तित्व का विशेषीकरण करते हैं।

(14) प्राथमिक समूह की सदस्यता को लोग अपने जीवन का एक अनिवार्य अंग समझकर स्वयं खुशी से स्वीकार कर लेते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन काल में परिवार या परिवारों, खेल के साथियों के समूहों, पड़ोस आदि का सदस्य अवश्य होता है। द्वितीयक समूहों की सदस्यता कोई विशेष आवश्यकता पड़ने पर ही ग्रहण की जाती है और इसी प्रकार इच्छानुसार समूह - विशेष से अपना सम्बन्ध तोड़ा या जोड़ा जा सकता है।

सामाजिक समूहों का महत्व

Importance of Social group) — सामाजिक समूह विश्वव्यापी है और वह भी इस अर्थ में कि सामान्यतः कोई भी व्यक्ति अकेला नहीं रहता है। इस सम्बंध में अरस्तु के कथन को उद्धृत किया जा सकता है। आपने कहा है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे दूसरे व्यक्तियों के साहचर्य की आवश्यकता होती है। कोई भी व्यक्ति

सम्पूर्ण संसार को भी अपना कहने से इन्कार कर देगा यदि उसे मालूम हो जाय कि उसे संसार में अकेले ही रहना होगा इसका कारण यह है कि मनुष्य स्वभाव से ही दूसरों के साथ रहना पसंद करता है। इस कारण सुखी मनुष्य भी दूसरों के साथ ही रहता है। अरस्तु महोदय ने यह भी कहा कि सामान्य जीवन व्यतीत करने में असमर्थ व्यक्ति या तो मनुष्यत्व के निम्न स्तर में है या उच्च स्तर में अर्थात या तो वह देव है या दानव। पशु-पक्षियों या कीड़े-मकोड़ों की संतानों को अपने जीवन धारण के लिए अपने माता-पिता या समाज पर अधिक निर्भर नहीं रहना पड़ता है परन्तु मानव-संतान को अपने पालन-पोषण, सुरक्षा, आराम, शिक्षा के लिए या संक्षेप में, सामाजिक प्राणी के रूप में अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए विभिन्न सामाजिक समूहों पर निर्भर रहना पड़ता है। मानव के सामाजिक व्यक्तित्व का प्रारम्भ 'परिवार' नामक समूह से होता है तथा अन्य समूहों के मध्य उसके व्यक्तित्व में परिपक्वता आती है। यही है - सामाजिक समूहों की आवश्यकता व महत्व की छोटी सी कहानी।

समाप्त